परमात्म प्रीति से जीवन परिवर्तन

आप देखेंगे कि जीवन को पतित से पावन, विकारी से निर्विकारी तथा भोगी से योगी बनाने का जो पुरुषार्थ है वह बहुत हद तक प्रभु प्रीति पर आधारित है। उसके लिए प्रायः यह कहा जाता है कि मनुष्य अपने जीवन में त्याग की भावना लाये। परंतु मनुष्य त्याग तो प्यार के आधार पर ही करता है। जब प्रभु की प्रीति में उसका मन जुट जाता है, तभी तो वह लोक-लाज, कलियुग की कुल मर्यादायें(आसुरी मर्यादायें), मान-अपमान का विचार, फैशन, चस्के और स्वाद का त्याग करता है। जैसे मीरा को प्रभु से प्रीत हो गई तो भव्य राजदरबार भी उसे फीका लगने लगा और उसका त्याग हो गया।

अन्य लोग कहते हैं, ईश्वरीय मार्ग में दृष्टि और वृत्ति को पवित्र करना ज़रूरी है, परंतु दृष्टि-वृत्ति तो तभी विकृत होती है जब मनुष्य का प्यार विकृत होता है।

अर्थात् जब उसका प्यार काम, क्रोध, लोभ या मोह का रूप धारण कर लेता है। अतः यदि मनुष्य की प्रभु से प्रीति होती है तो स्वाभाविक है कि मनुष्य से भी उसका शुद्ध प्यार होता है। इसका भाव यह हुआ कि उसकी दृष्टि-वृत्ति भी शुद्ध हो जाती है। यानी कि उनका व्यवहार विनाशी वस्तु व विनाशी देह से ऊपर उठकर अविनाशी व सुखदायी होता है।

कई बार यह भी कहा जाता है कि निराकार, निरहंकार और निर्विकार स्थिति ही पुरुषार्थ का सार है। किंतु काम, क्रोध आदि सभी विकार तथा अहंकार दैहिक प्रेम से पैदा होते हैं और प्रभु प्रीति से ही ये विकार शांत होते हैं। फिर चूंकि परमात्मा निराकार है, अतः उनकी प्रीति तथा स्मृति में हमारी स्थिति निर्विकार और अतिरिक्त निराकार अर्थात् विदेही स्थिति होती है। उसका देह एक लाइट के समान होता है यानी कि इस संसार में रहते भी संसार से उपराम होता है और ईश्वरीय प्रेम के कारण वो ईश्वर के प्रति समर्पित रहता है। परमात्मा के आदेश, उपदेश व संदेश में ही उसका जीवन समर्पित होता है। ये सब परमात्म प्रेम के कारण ही त्याग हो जाता है।

ऐसा भी कहा जा सकता है कि 'मरजीवा जन्म' लेने से ही मनुष्य के जीवन में परिवर्तन आता है। परंतु 'मरजीवा जन्म' लेने का भाव भी तो यही है कि देह के सर्व सम्बंधों में से प्रीति को निकाल कर एक परमात्मा, परम सखा, परम सद्गुरु परमात्मा ही से सर्व सम्बंध जोड़े जायें। अर्थात् सर्व सम्बंधों में होने वाली प्रीति एक ईश्वर ही पर केन्द्रित हो। इन सांसारिक सम्बंध, सम्पर्क से उनकी बुद्धि उपराम हो जाती और वही सम्बंधों का रस वो प्रभु से पाता है। रहेगा तो यहीं, परंतु परमात्मा के शुद्ध अलौकिक आकर्षण में ही उसकी प्रीत जुटी होगी। तो परमात्म प्रेम ही जीवन परिवर्तन का आधार हो जाता है।

आप देखेंगे कि आध्यात्मिक पुरुषार्थ में मनुष्य के मार्ग में जो विघ्न आते हैं, वे भी प्रीति ही से सम्बंधित होते हैं। मनुष्य जब प्रभु से प्रीत लगाता है तो उसके नातेदार, रिश्तेदार सोचते हैं कि शायद ये हमें छोड़ देगा, इसीलिए वे रुकावटें डालने लगते हैं या तो मनुष्य का अपना मन पिछली प्रीतियों यानी काम वाले सम्बंध अथवा मोह वाले सम्बंधों के प्रति पुनः आकर्षण अनुभव करता है। या ऐसा भी होता है कि उसका अपनी देह से प्यार(लगाव) होता है और उसके रोग अथवा अन्य किसी कठिनाइयों के कारण वह योग इत्यादि में विघ्न अनुभव करता है। एक तरह से उसके मन में द्वन्द्व चलता है। सांसारिक आकर्षण की प्रीतियों व ईश्वरीय आकर्षण की प्रीतियों के बीच युद्ध जैसी स्थिति अनुभव करता है।

इस तरह से अगर देखा जाये तो जीवन परिवर्तन परमात्म प्रीति के आधार पर ही होता है। जहाँ प्यार है वहाँ सब न्यौछावर हो जाता है। जैसे माँ का बच्चों के प्रति प्यार कई कुर्बानियाँ करा देता है। जीवन परिवर्तन प्रभु प्रेम पर ही टिका है। अन्यथा तो हम न इधर के, न उधर के रह जाते हैं। अतः शुद्ध प्रेम में किये गये पुरुषार्थ द्वारा ही जीवन परिवर्तन होता है।

इस... भूमि के कोने - कोने में समाये हैं- वरदान

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

इस मधुबन वरदान भूमि के कोने-कोने में वरदान भूमि में समाये हुए हैं। इसलिए यहाँ से सबको बहुत कुछ प्राप्तियां हो जाती हैं। यहाँ इतना बड़ा परिवार मिलता है, उन सभी ब्राह्मण आत्माओं की शुभ भावनायें और शुभी कामनायें जो एक-दो के प्रति हैं, वह भी बहुत ही कुछ आत्मा में बल भरती हैं इसलिए इस भूमि का नाम ही है मधुबन,वरदान भूमि। तो जहाँ वरदान ही वरदान हैं, हर सेकण्ड में, हर कर्म में आप इस वरदान भूमि द्वारा अपने को वरदानों से भरपूर कर सकते हो। अभी कौन, कितना क्या करता है और क्या बनता है, वह तो खुद और खुदा ही जाने। खास यहाँ पर बेफिकर बादशाह की स्थिति का बहुत अच्छा अनुभव कर सकते हैं, करना चाहिए। यहाँ से जो जितना भरपूर होकर जाते हैं उतना फिर वह वहाँ जाकर सबको भरपूर करने की सेवा करते हैं।

तो भगवान का वरदान अगर हम नहीं स्वीकार करेंगे तो क्या स्वीकार करेंगे! भगवान के होते भी अगर हम जो बनना चाहें, जो परिवर्तन करना चाहें वह नहीं करते हैं तो कब बनेंगे और क्या करेंगे? तो हमेशा पहले यह सोचना चाहिए कि हमारा स्वमान क्या है! बाबा हमें क्या बनाना चाहते हैं! हमसे क्या कराना चाहते हैं? हम जो चाहते हैं वह क्यों नहीं हो रहा है? गायन है कि जब स्वयं भगवान ने भाग्य बांटा तब तुम कहाँ थे? तो क्या यह गायन हमारा तो नहीं है? समस्या के समय क्यों, क्या को यूज़ न करके समाधान स्वरूप बनो। ज्ञान को स्पष्ट करने में भल यह क्यों, क्या यूज़ करो इससे भाषण तैयार हो जायेगा। मैं और मेरा में ममता न हो, नहीं तो बोझिल हो जायेंगे। बोझ से थकते हैं तो फिर कहेंगे बाबा, बाबा... अब कुछ करो। बाबा जो कहते वो न करके हम अपना दूसरा ही कुछ करेंगे तो क्या होगा! इसलिए किसी बात में संशय की उत्पत्ति कभी भी न हो क्योंकि इससे संकल्प हल्के होने कारण ढीले-ढाले पुरुषार्थी रह जाते हैं फलस्वरूप किसी बात में हमें सफलता नहीं मिलती है। तो बहुत समय का एकरस पुरुषार्थ चाहिए तब ही अन्त मते सो गति अच्छी होगी। इस अकाले मृत्यु के समय में कभी भी किसी का कुछ भी हो सकता है। इसलिए हमें अपनी कमज़ोरियों को खत्म करके विशेषताओं को देखते अपने को विशेष आत्मा बनाने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

जिसके ऊपर भगवान की नज़र पड़ी है वही तो यहाँ आकर पहुंचे हैं। इसलिए अभी सभी अपनी विशेषता को जानो और उसको कार्य में लगाओ, अभिमान में नहीं आओ तो विशेषता बढ़ती जायेगी और बुराई दबती जायेगी। इसलिए बाबा कहते हैं आप सदैव अपने स्वमान में रहो। ब्राह्मण जीवन की सम्भाल करो। समय की भी पहचान रखो।

सच्चे बनो, सहयोगी बनो और स्नेही रहो

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा से जो हम बच्चों को अच्छी-अच्छी शिक्षायें मिल रही हैं यही बाबा का प्यार है। बाबा कितना प्यार से शिक्षा देते हैं, बच्चे जो बात तुम्हारे काम की नहीं है वो नहीं करो। गुस्से की ज़रा भी परसेन्ट न रहे, इतनी योग अग्नि हो, जो हम सुख-शांति, शीतलता के देव बन जायें। तीनों चीज़ें हमें बाबा से वर्से के रूप में मिल जायें। शिवबाबा, भाग्यविधाता और वरदाता है, तो कोई बड़ी बात नहीं है।

हर आत्मा शरीर द्वारा अपना-अपना पार्ट बजाती है, हरेक का पार्ट अपना है। बाबा हमारा शिक्षक और सतगुरु है। धर्म और राज्य दोनों की स्थापना करने वाला वही धर्मराज है। पर हमको स्वधर्म में स्थित होके, स्नेह और आपसी सहयोग से सतयुगी राजधानी स्थापन करनी है। हम योगी भी बाबा के सहयोग से ही बने हैं।

यहाँ कोई कर्म को छोड़ करके योगी नहीं बना है। हमारे कर्मयोग से अनेक पुराने जन्मों के विकर्म विनाश हो गये, संस्कार शुद्ध हो गये। अगर कुछ रहा हुआ है तो अन्दर खिटपिट होगी ज़रूर। अगर पुराना खलास हो गया तो आत्मा शुद्ध, शांत और शीतल है, फिर जो भी उनके संग में आते हैं वो भी ऐसे बन जाते हैं। यह कमाल है हमारे बाबा की। बाबा के संग में रहते-रहते अच्छा रंग चढ़ गया है। बाबा के सामने कोई उबासी नहीं दे सकता था, किसी की आँख बंद नहीं होती थी। तो हमारी यह स्टूडेंट लाइफ भविष्य का निर्माण करती है। बाबा ने कर्मों की गुह्यगति का ऐसा ज्ञान दिया है, अच्छी तरह से बता दिया है ताकि अभी हर समय, हर सेकण्ड मन-वचन-कर्म से श्रेष्ठ बन करके रहें।

सर्वशक्तिवान बाबा में सारा ज्ञान है, वह नॉलेजफुल है पर असोचता है। बाबा करन -करावनहार है, पर अकर्ता है। ऐसे ही दुःख-सुख में नहीं आता है इसलिए अभोक्ता है। तो हम बाबा के बच्चों की भी ऐसी स्थिति आ सकती है, इसके लिए बहुत गहराई में जाना होगा। ड्रामा में क्या है, जो सीन चल रही है वो बाबा हर क्षण बता रहा है, सिखा रहा है कि तुम ऐसे चलो। अच्छे एक्टर्स का ध्यान डायरेक्टर के गुप्त इशारों पर होता है। ड्रामा का डायरेक्टर, क्रियेटर ही अब मुख्य एक्टर के रूप में पार्ट बजा रहा है, उसको अगर न जाने तो वो कौन है? बाबा का कितना बड़ा पार्ट है वो हम सब जानते हैं। बाबा ने बताया है और हम देख रहे हैं। उनकी हर एक्शन में हम भी शामिल हैं।

भक्त जिनका दर्शन करने के प्यासे हैं, हम उनके साथी बने हैं तो हमारे कर्म कितने ऊंचे व बलवान होने चाहिए। ऑलराउण्ड पार्ट में एक्यूरेट और एवररेडी रहना शोभता है। तो जो कर्म हम करते हैं, वो अपने लिए करते हैं। बाबा ने जो इशारा दिया है, उसी अनुसार करते हैं। सुबह उठने से लेके रात्रि तक जैसे तुम करोगे तुमको देख और करेंगे। बाबा ने आत्मा को अपना बनाके समझदार बनाया है तो सच्चे बनो, सहयोगी बनो और स्नेही रहो।

हमारा हर कर्म हो शुभ भावना और शुभ कामना से...

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

किसी दिन संकल्प करो कि आज बेहद की दुनिया से उपराम रहना है। आज सारे दिन गंभीर, धैर्यवत रहना है। आज विश्व के कल्याण के लिए सारा दिन शुभ भावनाओं का दान देना है। आज सबको शांति का दान देना है।

बाबा कहते बच्चे, तुम अपने स्वमान में, नशे में रहो। अपनी स्वस्थिति स्वमान पर रखो तो हर प्रकार की माया से ऊपर रहेंगे। माया हमारी परछाई है, उसको पीठ दे दो तो पाँव पड़ेगी लेकिन उसका स्वागत करो तो सिर पर चढ़ेगी। हम तो देवता बनने वाली आत्मा हैं, हमारे सिर पर लाइट का क्राउन है, रावण के सिर पर गधे का शीश है। बाबा हमें अपने गोल्ड हस्तों से रोज़ अमृतवेले लाइट-माइट से सिर की मालिश कर ताज पहना देता है। हम लाइट-माइट का ताज पहने हुए महावीर महावीरनियां हैं।

रोज़ अमृतवेले विशेष संकल्प लो कि हमें अन्तर्मुखी रहना है, स्वचिन्तन करना है। कभी बाह्यमुखता में नहीं आओ। किसी दिन संकल्प रखो कि आज कम बोलेंगे, धीरे बोलेंगे, मीठा बोलेंगे। फिर सारे दिन यह प्रैक्टिस करो। किसी दिन संकल्प करो कि आज बेहद की दुनिया से उपराम रहना है। आज सारे दिन गंभीर, धैर्यवत रहना है। आज विश्व के कल्याण के लिए सारा दिन शुभ भावनाओं का दान देना है। आज सबको शांति का दान देना है। कभी संकल्प करो आज हमें सब भक्तों का ईष्ट देव बन उनकी मनोकामना पूरी करनी है।

जन्म लेते ही बाबा ने कहा- आओ मेरे विजयी रत्न बच्चे आओ। तो यह विजय का वरदान हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। वरदानों का ताज सदा पहनकर रखो। हम विजयी थे, विजयी हैं, विजयी रहेंगे। फिर देखो कितनी शक्ति आ जाती है। जब खेलने जाते हैं तो कभी यह संकल्प नहीं करते कि खेल में हार होगी। माया अगर शेरनी है तो हम शेर हैं लेकिन माया तो बिल्ली है। हम तो अवतरित हुई आत्मायें हैं। अवतार माना ही पवित्र। हम पवित्र आत्मा थे, हैं और रहेंगे। माया को चैलेन्ज करो तो माया मन्सा में भी तूफान ला नहीं सकती।

हम सतयुग के सच्चे कोहिनूर हीरे हैं, आजकल के झूठे पत्थर नहीं हैं। ऐसे अनेक स्वमान हैं जिनकी स्मृति में रहो तो मन्सा शुद्ध हो जायेगी। विजयी माला के ऐसे मोती बनो जो दाना, दाने से मिल जाए। बीच में धागा बिल्कुल दिखाई न दे।

हम तपस्वी कुमार हैं, हमें तपस्या करनी है। कल कुछ भी थे राइट थे, रॉन्ग थे, बुरे थे उसे आज जीरो लगा दो। जीरो लगाने से हीरो बन जायेंगे। तीन बिन्दु का तिलक लगाओ- मैं आत्मा बिन्दु, बाबा बिन्दु और ड्रामा बिन्दु। यह तीन बिन्दु साथ हैं तो न स्थिति नीचे आयेगी, न डिस्टर्ब होंगे। न अपने को डिस्टर्ब करो न दूसरों को।

बाबा ने कहा है तुम छोटे-बड़े सब वानप्रस्थी हो। वानप्रस्थी माना सब झंझटों से परे। हम कोई मौनी बाबा नहीं हैं, लेकिन बाहर के वातावरण से परे हैं। जब वानप्रस्थी होकर रहना है तो फालतू बातों में, व्यवहारों में टाइम वेस्ट नहीं करना है। अपने समय को, शक्ति को सफल करना है। न टाइम वेस्ट हो, न एनर्जी वेस्ट हो। शुभ भावना, शुभ कामना से हर कर्म करो। पॉज़िटिव सोचो। वैर, विरोध, नफरत आदि की बातों में न जाओ।